Contents

:: अनुक्रमणिका ::

अध्याय :एक : विषय-प्रवेश पृ. 01 से 51

प्रास्ताविक -- उपन्यास : एक नयी साहित्यिक विधा -- उपन्यास की यथार्थधर्मिता -- उपन्यास की समाजधर्मिता -- तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक स्थितियों का आकलन -- संस्थाओं तथा महानुभावों का योगदान -- प्रेमचन्दकालीन अन्य लेखकों का संक्षेप में परिचय -- उनमें आलोच्य लेखक का स्थान -- नगरीकरण की प्रक्रिया -- मद्यपान -- वेश्यावृत्ति जैसी समस्यायिक स्थितियां -- निष्कर्ष ।

अध्याय: दो : ऋषभचरण जैन : व्यक्तित्व पृ. 52 से 110

प्रास्ताविक -- लेखक का जन्म --शिक्षा-दीक्षा -- बैरिस्टर चम्पतराय द्वारा दत्तक लिया जाना --वंश-परंपरा -- पारिवारिक उतार-चढ़ाव --शैशवकालीन प्रभाव -- पारिवारिक जीवन -- बाहरी व्यक्तित्व -- आंतरिक व्यक्तित्व --मित्र-मंडली ---साहित्य सर्जना -- बहुआयामी व्यक्तित्व --संघर्ष ---गांधीवाद का प्रभाव -- समाज-सुधारक प्रवृत्तियां --मानव-धर्म की स्थापना -- नारी-विषयक दृष्टिकोण -- मानव-सहज दुर्बलताएं -- मित्रों के संस्मरण -- फिल्म-वितरण का व्यवसाय -- पतन -- व्यावसायिक आघात -- विक्षिप्त अवस्था -- निधन ।

अध्याय : तीन : ऋषभचरण जैन : कृतित्व पृ. 111 से 136

प्रास्ताविक -- समग्र कृतित्व पर दृष्टिपात --उपन्यासकार --कहानीकार -- अनुवादक -- प्रकाशक ---पत्रकार ---

साहित्यिक संस्थाओं के प्रबन्धक -- प्रकाशक -- फिल्म-
वितरक -- उपलब्धि -- निष्कर्ष ।

अध्याय : चार : ऋषभचरण जैन के उपन्यास पृ. 137 से 238

प्रास्ताविक -- मयखाना --हिज हाइनेस -- तीन इक्के --
हर हाइनेस -- चम्पाकली -- भाई -- जवानी सवारियां --
गदर -- सत्याग्रह -- मन्दिर-दीप --- तपोभूमि -- भाग्य
-- रहस्यमयी -- दिल्ली का व्यभिचार -- राजकुमार
भोज -- अन्य उपन्यास -- निष्कर्ष ।

अध्याय : पांच : ऋषभचरण जैन की कहानियां पृ. 239 से 284

प्रास्ताविक -- ऋषभजी की कहानी कला की विशेषताएं --
कुछ विशिष्ट कहानियां -- दान -- भय --दुनियादारी--
स्वर्ग की देवी -- संयोग -- मन का पाप -- कौड़ियों का
हार -- पांच रूपये का कर्ज -- रखैल -- सुधार की खोज --
निग्रह -- अंधी दुनिया -- निष्कर्ष ।

अध्याय : छः : समस्याओं का निरूपण , शिल्प एवं भाषिक-संरचना पृ. 285 से 356

प्रास्ताविक -- पारिवारिक समस्याएं -- सामाजिक समस्याएं
--आर्थिक समस्याएं -- वैयक्तिक समस्याएं -- इतर समस्याएं
-- शिल्प के विभिन्न आयाम -- भाषाशैली -- परिवेश-
निर्माण में भाषा के का योगदान -- चरित्र-सृष्टि में भाषा
का योगदान -- ऋषभजी की भाषाशैली के कतिपय गुण --
सरलता और सुबोधता , प्रवाहिता , सामासिकता , व्यासिकता,
कथोपकथनों की भाषा -- साकेतिकता -- व्यंग्यात्मकता --
मुहावरेदानी -- कहावतों के प्रयोग -- नवीन भाषाभिव्यंजना
--नये विशेषण -- नये रूपक -- नये उपमान -- शब्द-विचार
-- संस्कृत , उर्दू तथा ठेठ भाषा के शब्द -- निष्कर्ष ।

अध्याय : सात : उपसंहार पृ॰ 357 से 367
======================
निष्कर्ष -- विहंगावलोकन -- संभावनाएं -- महत्व तथा उपलब्धियाँ ।

संदर्भिका : §1§ परिशिष्ट -- उपजीव्य-ग्रंथों की सूची 368-375
§2§ परिशिष्ट -- सहायक-ग्रंथों की सूची /हिन्दी/
§3§ परिशिष्ट -- सहायक-ग्रंथों की सूची /अंग्रेजी /
§4§ पत्र-पत्रिकाएं

xxx=====xxxxxx===== xxxxxxxx ======= xxxxxxxx